सृष्टा

डॉ0 शिवेन्द्र त्रिपाठी 'समीर'

संसार अपने आप में निरपेक्ष सत्ता है। महर्षियों ने अव्यक्त, सूक्ष्म, नित्य, अथवा सद्महत्व रूप प्रकृति कहा है। सृष्टि के आदिकाल में केवल ब्रह्म है जो अजन्मा, अविनाशी, अजर, अमर, अपरिमेय और आधार निरपेक्ष है। वह गंध, रूप, रस, स्पर्श और शब्द से रहित अनादि और अनन्त है। वह सम्पूर्ण जगत की 'योनि' और तीन गुणो का कारण है। ब्रह्म स्वयं अपने आप में निष्क्रिय है। ब्रह्म को सक्रिय बनाने वाली है शक्ति। शिव भी बिना शक्ति के शव बन जाते है। मूल प्रकृति अव्यक्त रूप में रहती है जो संसार की मूल मानी गयी है। प्रकृति की व्यक्ति शक्ति क्रिया है, जो एक तत्व शक्ति से दूसरे तत्व शक्ति के साथ संयुक्त होकर क्रियाशील होती है। संसार की केन्द्र शक्ति क्रिया है। जो सृष्टि के प्रत्येक अणु को गति प्रदान करती है। इस गति को हम GOD कहते है। महर्षियों ने इस गति को G से जेनरेटर 'ब्रह्मा' o से ऑपरेटर 'विष्णु' D से डिसटैक्टर 'महेश' की संज्ञा दी है। विश्व शक्ति का साम्राज्य है। शक्ति क्रिया के रूप में अव्यक्त है। संसार के सभी जड़ चेतन पदार्थो में शक्ति ही विद्यमान है। शक्ति के व्यक्त होने के माध्यम तीन गुण है जो सत, रज, तम कहे गये है। शक्ति प्रकृति में व्यक्त होने के लिए पाँच तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को अपना माध्यम बनाती है। शक्ति ही वह परम तत्व है जिससे भौतिक जगत की रचना हुई है। प्रकृति की व्यक्त शक्ति सृष्टा जिसका पर्याय नाम नारी है। जिसे हम जननी कहते है। जननी के विराट रूप को महर्षियों ने जगत जननी कहा है। जो वेद के ऋचाओं वर्णित है।

'ऋग्वेदोक्त देवी सूक्तम, मूर्ति एवं प्राधानिक रहस्यम' ।

सर्वरूप मयी देवी सर्व देवी मयम् जगत।

अतोऽहं विश्व रूपाम् तां नमामि परमेश्वरी।

(देवी सर्वरूप मयी है। तथा सम्पूर्ण जगत देवी मय है। अतः उन विश्व रूपा परमेश्वरी को नमस्कार करता हूं।

सर्वस्पाधा महालक्ष्मी स्त्रिगुण परमेश्वरी।

लक्ष्या–लवत्य स्वरूपा सा व्याप्यम् कृत्सनं व्यवस्थिता।

(त्रिगुणमयी परमेश्वरी महालक्ष्मी ही सबका आदि का कारण है। वे ही दृश्य–अदृश्य रूप में सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त होकर स्थित है।

वेदो में नारियों की वंदना तो की गयी है लेकिन समानता के अधिकार के नाम पर उनका सदैव तिरस्कार होता रहा है। युग–युगान्तर में कालचक्र–चक्रानुसार कभी आध्यात्म युग आता है, तो कभी भौतिक युग। देव और दानव कोई आसमान से उतरकर नही आते है। सब इसी धरती पर अपने आचरण से देव और दानव कहलाते है। भारत के दीर्घावधिक अतीत में मानवीय मनीषा ने अच्छे आचरण वाले पुरूषों को देव व अच्छे आचरण वाली नारियों को दुर्गा–लक्ष्मी–काली–सरस्वती आदि परम शक्ति के रूप में उनकी प्रतिष्ठा औा पूजा की है। वे मानवीय प्रवृत्तियों की संघठित, संम्पुटित एवं समन्वित शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाली दिव्य तेजा, पुन्य–चरित्रा युवा–शक्ति नारियां ही थी जो आपनी चारित्रिक–तेज और संदीप्त शौर्य एवं मानवता के कल्याण और परित्राण से करूणामयी देवी के रूप में प्रतिष्ठित और पूजित हो गयी है। जब कभी आध्यात्म युग आता है तो सत और रज गुण का प्रभाव बढ़ जाता है और जब भौतिक युग आता है तब रज और तम के गुणों मे बढ़ोत्तरी हो जाती है। समय चक्र चक्रानुसार जब कभी भौतिक युग आया है पुरूष सत्ता प्रधान समाज ने नारियों के साथ सामान्य व्यवहार नही किया है। वे उन्हे प्रताड़ित और शोषित करते आये है।

जिस देश में गाय, गंगा, गीता और गायत्री की ऋचायें घर–घर गूंजा करती थी। आज उसी भारत भूमि में गाय, गंगा, गीता

और गायत्री को रक्षण–संरक्षण और आरक्षण की जरूरत पड़ गयी है। ये विडम्बना नही तो और क्या है? संसार को जन्म देने वाली सृष्टा (माँ) घरों में कैद होकर आसू बहा रही है। ये कहानी एक अकेली नारी की कहानी नही है। संसार के समस्त नारी जाति की कहानी है। उनकी करूण क्रन्दन की कहानी है जो पुरूष सत्ता प्रधान समाज से प्रताड़ित होकर घरों में कैद हो गूंगी गुड़ियां बनकर जी रही है। जो नारी अपने लहू सचित अमृत से नर को जीवन देती है और वही नर बड़ा होकर उन्हे असहाय परकटे पंछी की तरह पिजड़े में बन्द कर उन्हे प्रताड़ित और व्यथित करता है क्या यह पुरूष की क्रूर और विक्षिप्त मानसिकता का पर्याय नही है। आज संसार अपने पथ से भटक गया है। भौतिकता की चका–चौध ने मनुष्य को विक्षिप्त कर दिया है। नारी के आंसू देखने के लिए संसार ने अपनी आंखे बन्द कर लिये है। लेकिन जब–जब विश्व के पटल पर व्यक्ति और समाज निर्माण की बात उठती है और विश्व स्तर पर संगोष्ठियां और सेमिनार आयोजित होते है। तब तब–तब चिंतन का यह सवाल जरूर उठता है कि ''स्वस्थ समाज और राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका क्या है''? जब–जब ऐसे विषय चिन्तन के लिए उठाये जाते है तब–तब यह सवाल अवचेतन तल से यह भी उठता है कि जब समाज और परिवार स्त्री और पुरूष दोनों के सहयोग से बनता है और समूह निर्माण में दोनो की सहभागीदारी होती है तब यह सवाल क्यो नही उभर के सामने नही आता, कि पुरूषों की समाज निर्माण में भूमिका क्या है? क्या समाज निर्माण में पुरूषों की जिम्मेदारी नही होनी चाहिए? पुरूषों को समाज की जिम्मेदारी से विमुक्त रहने का लायसेन्स किसने दिया है? इस सवाल को जब भी सामज में उठाया गया होगा, पुरूष वर्ग अपनी जिम्मेदारी से बचने के लिए 'कुपुत्रों जायेति क्वचिदपि कुमाता न भवति।' कुपुत्र होना सम्भव है किन्तु कही भी माता कुमाता नही होती कहकर अपनी जिम्मेदारी से बचने के लिए सदैव अपना पल्ला झाड़ लिया होगा। इस विचार को हम चैतन्य स्तर पर विचार करने पर पाते है कि

''सर्वरूप मयी देवी सर्वदेवी मयम् जगत।
अतोऽहं विश्व रूपाम् तां नमामि परमेश्वरीम्।'' एक बात यह तो स्पष्ट हो जाती है कि नारी सृष्टा है और उसमें पूरी सृष्टि समाहित है।

सृष्टा में हमने वेदकाल से रामायण और महाभारत काल तक के नारी पात्रों पर पुरूष सत्ता की बर्बरता पूर्ण अत्याचार की कहानी के साथ समाज को अपराध बोध का ज्ञान भी कराने का प्रयास किया **क्या** है क्योकि नारी समस्या मानव सभ्यता और संस्कृति की समस्या है। राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक की समस्या है। इन्सानियत और उसके भविष्य की समस्या है। ये परिवार नाम की सामाजिक आदर्श संस्था की समस्या है। जिसका शैशवास्था से शारीरिक शोषण शुरू हो जाता है और अब तो भ्रूणावस्था से ही उसे मिटाने का काम शुरू हो गया है, जिसकी विकारालता का अंदाजा लगाना कोई मुश्किल काम नही है। हमे जन्म देने वाली माँ को कितनी सुखद मातृत्व का एहसास होता है। जब वो नौ माह तक अपनी संतान को अपनी कोख में पोसती है। उसे सबसे प्यारा और पवित्र शब्द लगता है जब उसको कोई माँ कहकर पुकारता है। और यह ''माँ'' की संज्ञा स्वयं में अपने आप सर्वोच्च सम्मान है। इन्ही शब्दों के साथ **सृष्टा** से समाज का कुछ हित हो सकेगा, यही हमारी कामना है।

(पूर्व सम्पादक, लेखक, साहित्यकार–गीत–संगीत)
प्रबन्धक/सचिव
ग्राम भारती संस्था, आलापुर, प्रतापगढ़ (उ0प्र0)
मो0 :– 9473697236, 9794392314